BA PART –I (Hons.) & (Sub.), Paper- I

डॉ0 गौतम कुमार

अतिथि शिक्षक

राजनीति विज्ञान विभाग

आचार्य नरेन्द्र देव महाविद्यालय, शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

लोकतंत्र की सफलता हेतु आवश्यक शर्त्ते

(Essential Conditions for the success of Democracy)

प्रजातंत्र की सफलता के लिए निम्नलिखित आवश्यक शर्त्ते हैं :–

1. **प्रजातंत्रात्मक आस्था** – यह प्रजातंत्र की बुनियाद है। यदि जनता को इन मान्यताओं में विश्वास न हो तो प्रजातंत्र नहीं चल सकता है।
2. **जन जागरूकता** – जब तक प्रजातंत्र की रक्षा के लिए जनता जागरूक नहीं होगी, अपने अधिकारों और कत्तव्यों का प्रयोग कर शासन में सक्रिय भागीदारी नहीं होगी, तब तक प्रजातंत्र की सफलता संभव नहीं है।
3. **नागरिकों का नैतिक उत्थान** – लोकतंत्र नागरिकों की चरित्रशीलता और नैतिकता पर आधारित होता है। नागरिकों को नैतिक दृष्टि से उच्च एवं ईमानदार होना चाहिए, उनमें परमार्थ एवं कर्त्तव्यपरायणता की भावना होनी चाहिए। लावेल के शब्दों में, "जनप्रिय सरकारें उस समय तक भष्टाचार से बिल्कुल मुक्त नहीं हो सकती जब तक कि राह चलते साधारण नागरिक का नैतिक स्तर ऊँचा नहीं होता और भष्टाचारियों का सामाजिक बहिष्कार नहीं किया जाता।"
4. **शिक्षा का प्रसार** – अशिक्षा प्रजातंत्र का सबसे बड़ा दुशमन है। जिस देश की जनता अशिक्षित है, वहॉ का प्रजातंत्र हमेशा भष्ट होगा। शिक्षा के आभाव में जनता अपने अधिकार, कर्त्तव्य और मतदान का महत्व नहीं समझ सकता है। लोकतंत्रीय राज्य को सार्वजनिक शिक्षा का विस्तृत प्रबन्ध करना चाहिए तथा जनसम्पर्क के माध्यम से जनता में शिक्षा एवं मानवीय मूल्यों का अलख जगाना चाहिए। किसी ने कहा है कि, "शिक्षा

और सतत् जागरूकता ही लोकतंत्र का मूल्य है।" इसलिए प्रजातंत्र की सफलता के लिए जनता को शिक्षित होना अति आवश्यक है।

5. **लिखित संविधान** – भारत का संविधान लिखित संविधान है। कोई भी व्यक्ति संविधान के द्वारा सरकार के रूप, अपने अधिकार एवं कत्तव्यों का आसानी से ज्ञान प्राप्त कर सकता है। लिखित संविधान जनता का रक्षक होता है।
6. **सामाजिक और आर्थिक समानता** – समानता की घोषणा कर देने से ही राजनीतिक समानता की स्थापना नहीं हो जाती, व्यवहार में राजनीतिक समानता को स्थापित करने के लिए सामाजिक और आर्थिक समानता आवश्यक है। आर्थिक समानता के आभाव में प्रजातंत्र सफल नहीं हो सकता। जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि, "एक भूखे व्यक्ति के लिए मत का कोई महत्व नहीं।" तथा हॉब्सन के अनुसार, "धनिकों का धन और निर्धनों की निर्धनता लोकतंत्र को भष्ट कर देती है।"
7. **नागरिक स्वतंत्रता** – लोकतंत्र में जनता सर्वोपरि होती है अर्थात् जनता ही प्रतिनिधियों के माध्यम से शासन का कार्य करती है। इसलिए व्यक्तियों के नागरिक स्वतंत्रता के अन्तर्गत अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सम्मेलन और संगठन की स्वतंत्रता इत्यादि प्राप्त होनी चाहिए। लोकतन्त्रीय शासन व्यवस्था में लोकमत ही शासक को मर्यादा और नियंत्रण में रख सकता है। इसलिए देश में विकास के लिए स्वतंत्र वातावरण का निर्माण आवश्यक है, जिससे प्रजातंत्र सफल रह सके।
8. **समाचार पत्रों की स्वतंत्रता** – जिस देश में समाचार पत्रों पर प्रतिबंध लगा रहता है उस देश में प्रजातंत्र की असफलता निश्चित मानी जा सकती है। स्वतंत्र समाचार पत्रों का स्वस्थ जनमत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान रहता है। ब्राइस के शब्दों में, "बड़े देशों में समाचारपत्रों द्वारा ही प्रजातंत्र संभव हो पाता है।"
9. **स्थानीय स्वशासन एवं समानता आधारित सामाजिक व्यवस्था** – प्रजातंत्र सफल हो सके, इसके लिए आवश्यक है कि स्थानीय क्षेत्रों में भी प्रजातंत्रीय परम्परा का पालन किया जाय। लैक के शब्दों में, "स्थानीय स्वशासन प्रजातंत्र का आधार और प्रशिक्षण है।" सामाजिक स्तर पर स्त्रियों को समानता से वंचित रखा गया है। इसके लिए सामाजिक परिवर्तन लाना आवश्यक है अन्यथा लोकतंत्र शासन प्रणाली अन्दर से कमजोर हो जायेगी।

10. **स्वस्थ, सुनिश्चित जनमत** – यह ऐतिहासिक तथ्य है कि लोकतंत्र उन्हीं देशों में सफल हुआ है, जहॉ स्वस्थ लोकतंत्रीय परम्पराएँ रही है तथा लोकतंत्र सार्थक रूप से तभी कार्य कर सकता है, जब देश में शान्ति तथा स्वस्थ वातावरण की व्यवस्था हो। प्रजातंत्र की सफलता के लिए प्रजातांत्रिक परम्पराओं का पालन भी आवश्यक है। प्रजातंत्र की सफलता के लिए एक सचेत और तेज जनमत प्रजातंत्र की प्रथम शर्त्त है।
11. **राजनीतिक दल** – राजनीतिक दलों का होना भी प्रजातंत्र के लिए बहुत आवश्यक है। प्रजातंत्र शासन प्रणाली दलगत हुआ करती है। कहा भी गया है, "राजनीतिक दल प्रजातंत्र का प्राण है।" परन्तु राजनीतिक दलों का संगठन राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक आधारों पर होना चाहिए न कि सांप्रदायिकता, वैयनस्य आदि के आधार पर जो प्रजातंत्र को असफल करते हैं।
12. **कानून का शासन** – यदि शासन किसी व्यक्ति विशेष या समूह विशेष के इच्छानुसार चलता है तो प्रजातंत्र जीवित नहीं रह सकता। जब देश में संकट की स्थिति हो, तो लोकतंत्र को तब तक स्थगित रखना जरूरी होता है, जब तक कि देश की स्थिति सामान्य न हो जाए। यही कारण है कि लोकतंत्रीय संविधान में अपातकालीन व्यवस्थाएँ रखी गई है ताकि देश के बाहर अथवा अन्दर कोई खतरा पैदा होने पर शासन को प्रायः असीम शक्तियॉ प्राप्त हो सके। अतः शासन को सर्वमान्य कानून के आधार पर चलना आवश्यक है।
13. **राष्ट्रीय एकता की भावना** –बर्गेस के अनुसार, "प्रजातंत्र की सफलता के लिए आवश्यक तत्व यह भी है कि जनता में राष्ट्रीय एकता की भावना होनी चाहिए।" इससे जनता में जातीयता तथा स्थानीय संकीर्णता की भावना नहीं आ पाती है। इस प्रकार, राष्ट्रीय एकता की भावना से ओत–प्रोत रहने वाली जनता राष्ट्र पर अपने को न्योछावर भी कर दे सकती है। ऐसे देश में प्रजातंत्र की सफलता निश्चित है।
14. **विश्व शांति की स्थापना** – प्रजातंत्र की सफलता के लिए विश्व–शान्ति की स्थापना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि युद्व के समय प्रजातांत्रिक प्रक्रिया को छोड़कर स्वेच्छाचारिता की प्रवृत्ति अपना ली जाती है।
15. **योग्य और निष्पक्ष नागरिक सेवाएँ** – लोकतंत्र में जनता के प्रतिनिधि केवल नीति का निर्माण करते हैं और इस नीति को क्रियान्वित करने का कार्य नागरिक सेवाओं द्वारा ही

किया जाता है। इसलिए नागरिक सेवाओं के सदस्य को योग्य, कार्यकुशल एंव दक्ष होना आवश्यक है ताकि बेहतर प्रशासन व्यवस्था संभव हो सके। अतएव लोकतंत्र की सफलता के लिए योग्य और निष्पक्ष नागरिक सेवाएँ नितान्त आवश्यक है।